हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र में प्रवेश परीक्षा संपन्न

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु 30 मई 2015 से 01 जून 2015 तक कुल छह पालियों में प्रवेश परीक्षा ली गई। कोलकाता केंद्र में विभिन्न विषयों में प्रवेश के लिए कुल 167 विद्यार्थियों ने आवेदन किया था किंतु प्रवेश परीक्षा में कुल 119 विद्यार्थी ही निम्नानुसार बैठेः

30 मई 2015, प्रथम पाली-आवेदक-12, परीक्षा में बैठे-6, द्वितीय पाली-आवेदक-16, परीक्षा में बैठे-11

31 मई 2015, प्रथम पाली-आवेदक-51, परीक्षा में बैठे-37, द्वितीय पाली-आवेदक-05, परीक्षा में बैठे-02
1 जून 2015, प्रथम पाली-आवेदक-29, परीक्षा में बैठे-22, द्वितीय पाली-आवेदक-54, परीक्षा में बैठे-41

वर्धा के पाठ्यक्रमों के अलावा कोलकाता केंद्र में संचालित चार नियमित पाठ्यक्रमों-हिंदी में एमए व एमफिल, जनसंचार में एमए तथा पीएचडी की प्रवेश परीक्षा ली गई। प्रवेश परीक्षा की व्यवस्था एसिस्टेंट प्रोफेसर अनिर्वाण घोष, सहायक क्षेत्रीय निदेशक डा. प्रकाश नारायण त्रिपाठी तथा अनुभाग अधिकारी शंभु दत्त सती ने संभाली।

हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र में प्रवेश परीक्षा देते विद्यार्थी

कोलकाता केंद्र में वृक्षारोपण

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर पांच जून 2015 को अपने परिसर में वृक्षारोपण किया।

कोलकाता केंद्र में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का एक दृश्य।

इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन इंटरनेशनल एसेंबली आफ ह्यूमन राइट्स के अध्यक्ष नवनीत पांडेय, उपाध्यक्ष अधिवक्ता विनोद कुमार सिंह, पूर्व आईजी देवेंद्रनाथ विश्वास, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे, सहायक क्षेत्रीय निदेशक डा. प्रकाश त्रिपाठी, पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के अधिकारी गौतम मजुमदार, कार्यक्रम अधिकारी गौतम मुखर्जी समेत भारी संख्या में लोग मौजूद थे।

शिक्षा समस्त अच्छे व बुरे अनुभवों का सारः प्रो. अरविंद झा

कोलकाता, 13 जुलाई 2015। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरविंद के झा ने कहा है कि शिक्षा कुछ और नहीं, समस्त अच्छे और बुरे अनुभवों का सार है। प्रो. झा आज विवि के कोलकाता केंद्र में चारों नियमित पाठ्यक्रमों-एमए हिंदी, एमए जनसंचार, एमफिल हिंदी तथा पीएचडी जनसंचार का सत्रारंभ

कर रहे थे। 'शिक्षा की समझ और समझ की शिक्षा' पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा स्वयं को सोचने और स्वयं को बदलने की शक्ति देती है।

सत्रारंभ व्याख्यान देते प्रो. अरविंद झा। उनके दाएं डा. अमित राय और बाएं डा. कृपाशंकर चौबे और पूजा शुक्ल

प्रो. झा ने कहा कि शिक्षा के चार सोपान हैं-अनुभव, ज्ञान, सोच और परिवर्तन। समझ वह है जो नए विचारों को जन्म दे। शिक्षा व समझ के संबंध को समझने के लिए शिक्षा, समझ व ज्ञान के त्रिकोण को समझना आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति की समझ व ज्ञान को परिष्कृत करती है और समझ के आधार पर ज्ञान का क्रमशः विकास होता है और इन तीनों की संचालक शक्ति है-कर्म। इस अवसर पर एम.फिल की छात्रा नेहा गुप्ता ने कहा कि सिर्फ अपने काम से काम रखना निजी स्वार्थ है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह सिर्फ अपने काम से काम नहीं रख सकता। कार्यक्रम का संचालन कोलकाता केंद्र के प्रभारी/ एसोसिएट प्रोफेसर डा. कृपाशंकर चौबे ने किया। धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डा. अमित राय ने किया।

शामियाने की तरह है भारतीय साहित्यः केदारनाथ सिंह

कोलकाता, 15 जुलाई। हिंदी के विशिष्ट साहित्यकार डा. केदारनाथ सिंह ने कहा है कि भारतीय साहित्य शामियाने की तरह विशाल है। वह एक नहीं है। भारतीय साहित्य के

अंतर्गत अनेक भाषाएं आती हैं। डा. सिंह महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में भारतीय साहित्य की अवधारणा पर विशेष व्याख्यान दे रहे थे।

कोलकाता केंद्र में विद्यार्थियों को आटोग्राफ देते डा. केदारनाथ सिंह

डा. सिंह ने कहा कि देश में जितनी भाषाओं में साहित्य लिखा जाता है, वह भारतीय साहित्य है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारतीय साहित्य एक है जो अनेक भाषाओं में लिखा जाता है। यहां एक और अनेक पर ध्यान दिया जाना चाहिए। भारतीय साहित्य की अवधारणा के संदर्भ में अनेकता के तत्व को खोजना महत्वपूर्ण है। इस अनेक शब्द में भारतीय साहित्य का सार छुपा हुआ है। डा. सिंह कोलकाता केंद्र में दिनभर विद्यार्थियों के साथ रहे। उन्होंने विद्यार्थियों के पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

'पूर्वोत्तर की भाषा, संस्कृति और समाजः एक अंतरानुशासनिक संवाद' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र द्वारा 'पूर्वोत्तर की भाषा, संस्कृति और समाजः एक अंतरानुशासनिक संवाद' पर आयोजित तथा भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सात से नौ अगस्त 2015 तक कोलकाता के ऐकतान इजेडसीसी के सभागार में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस संगोष्ठी में पूर्वोत्तर पर गंभीर अकादमिक कार्य करनेवाले जिन विद्वानों ने भाग लिया, उनमें मनोविज्ञानी प्रो. गिरीश्वर मिश्र, डा. विमल एक्वाइजम, डा. अरविंद मिश्र, डा. कोर्सी डोरेने कर्सिंग, समाजशास्त्री डा. महेंद्र नारायण कर्ण व प्रो. अवधेश कुमार सिन्हा, दर्शन शास्त्र के अध्येता डा. भगत ओइनम, अर्थशास्त्री डा. सौमेन चट्टोपाध्याय, भूगोलविद डा. पृथ्वीश नाग, शिक्षा शास्त्री प्रो. अरविंद के झा, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में पूर्वोत्तर अध्ययन

तथा नीति अनुसंधान केंद्र के निदेशक प्रो. संजय हजारिका, पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक डा. ओम प्रकाश भारती, फिल्म डिवीजन के उप महानिदेशक जोशी जोसेफ,

राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान के महानिदेशक डा. अरुण कुमार चक्रवर्ती, नेहू, शिलांग में हिंदी के प्रोफेसर डा. माधवेंद्र पांडेय, त्रिपुरा विश्वविद्यालय में हिंदी की असिस्टेंट प्रोफेसर डा. मिलन रानी जमातिया, पद्मश्री से सम्मानित मिजो भाषा के साहित्यकार प्रो. ललत्लुंअंलिआना खिअंग्ते, बांग्ला साहित्यकार कपिल कृष्ण ठाकुर, हिंदी साहित्यकार चंद्रकला पांडेय, दैनिक भास्कर के समूह संपादक प्रकाश दुबे शामिल थे।

इसके अलावा कवि-गायक मृत्युंजय कुमार सिंह, डा. राकेश कुमार मिश्र, डा. अमित राय, डा. कमल किशोर मिश्र, पूजा शुक्ला, राजेश कुमार यादव, प्रकाश त्रिपाठी, टीवी पत्रकार रजनीश, शोधार्थी अजय कुमार सिंह, नुक्फांती, तेजी इशा, नेहा गुप्ता, नेहा चतुर्वेदी, शिव प्रकाश दास, फातिमा कनीज और सोनी कुमारी सिंह ने भी संवादी के रूप में संगोष्ठी में हिस्सा लिया।

पत्रकारिता पर बाजार का असरः दिनेश गौतम

कोलकाता, 09 सितंबर। टीवी पत्रकार दिनेश गौतम ने कहा है कि आज की पत्रकारिता पर बाजार और सत्ता का असर है। श्री गौतम आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विद्यार्थियों से संवाद कर रहे थे।

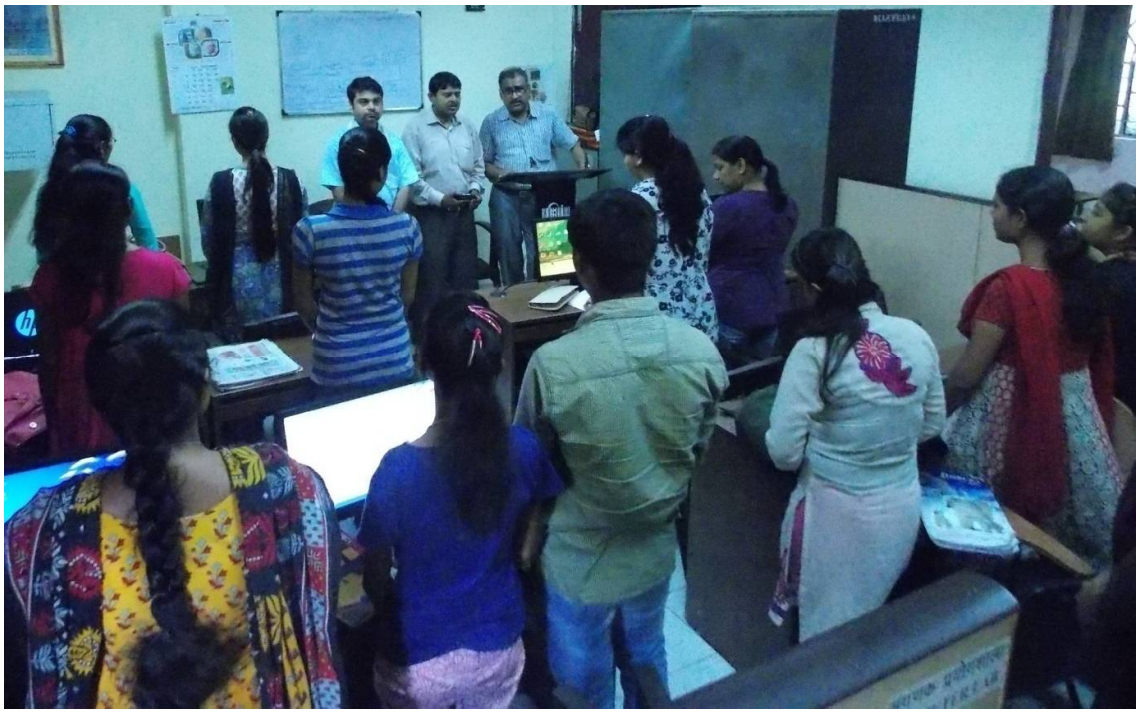

उन्होंने पत्रकारिता में आदर्श और व्यवहार, वर्त्तमान पत्रकारिता की दिशा और दशा, साहित्य और इसका पत्रकारिता से सम्बन्ध, पत्रकार के लिए आवश्यक हुनर और योग्यता पर अपनी बात रखी।

विश्व पटल पर हो रहा है हिंदी का विस्तारः प्रो. रामशरण जोशी

कोलकाता, 14 सितंबर। जाने-माने समाजविज्ञानी प्रो. रामशरण जोशी ने कहा है कि हिंदी का अभ्युदय भारत में ही नहीं, विश्व पटल पर हो रहा है। भारत में पहले हिंदी के तीन टकसाल थे-आगरा, लखनऊ और बनारस किंतु अब न केवल भारत, बल्कि विदेशों में भी उसका व्यापक विस्तार हो चुका है। प्रो. जोशी आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र द्वारा आयोजित भारतीय भाषा दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र ने हिंदी दिवस को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाया। इस कार्यक्रम का सह आयोजक पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र था।

कार्यक्रम को संबोधित करते प्रो. रामशरण जोशी, मंच पर नेहा झा, एसपी तिवारी, एसके सैनी और प्रो. अमरनाथ

समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए प्रो. राम शरण जोशी ने कहा कि आज सौ से ज्यादा देशों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। भोपाल में सद्यः संपन्न विश्व हिंदी सम्मेलन में उनसठ देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए आलोचक प्रो. अमरनाथ ने कहा कि राष्ट्रीय जीवन से अंग्रेजी का वर्चस्व खत्म करने का प्रयास होना चाहिए क्योंकि इसी में छोटे से वर्ग की ताकत निहित है जो हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं और लक्ष्यों को विकृत करता रहता है। 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार 63.8 प्रतिशत के साथ साक्षरता में बिहार सबसे निचले पायदान पर है और इसी के आस-पास हिन्दी भाषी अन्य राज्य भी हैं जबकि दूसरी ओर धन का बहुत बड़ा हिस्सा अंग्रेजी में उच्च और व्यावसायिक शिक्षा के लिए खर्च कर दिया जाता है। इससे केवल एक छोटे से प्रभु वर्ग की ही अंतरराष्ट्रीय प्रगति हुई है। इसने राष्ट्रीय एकता को भारी नुकसान पहुंचाया है। इसके कारण महानगरीय और ग्रामीण भारत में अंतराल तेजी से बढ़ा है। बीएसफ के डीआईजी एस.पी. तिवारी ने कहा कि हिंदी का प्रसार तब होगा जब उसे लेकर हममें हीन ग्रंथि न हो। आरपीएफ के डीआईजी एस.के. सैनी ने कहा कि हिंदी बाजार की भाषा बन गई है। टीवी पत्रकार रजनीश ने कहा कि हिंदी का भविष्य भारतीय भाषाओं के साहचर्य में ही है। पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के उप निदेशक समीर मुखोपाध्याय ने कहा कि हिंदी ही देश की संपर्क भाषा है। समारोह में फातिमा कनीज ने काकबरक, नीरु कुमारी सिंह ने अओ, अनामिका शुक्ल ने बुंदेलखंडी और अंशु सिंह ने मलयालम कविता का पाठ किया। कार्यक्रम में कवि-गायक मृत्युंजय कुमार सिंह की

नेपाली में गाई गई कविता की पुनर्प्रस्तुति हुई तो जूही चटर्जी और नेहा झा ने काव्य संगीत प्रस्तुत किया। रजनीश कुमार प्रसाद, शीला कुमारी गुप्ता और मौसमी गुप्ता ने स्वरचित हिंदी कविताएं सुनाईं। नेहा चतुर्वेदी व उमेश शर्मा ने पुस्तक चर्चा में हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन नेहा झा ने किया। मंचासीन अतिथियों का सम्मान महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे, असिस्टेंट प्रोफेसर डा. अमित राय और सहायक क्षेत्रीय निदेशक डा. प्रकाश नारायण त्रिपाठी ने सूत की माला पहनाकर किया।

बुद्धिनाथ मिश्र का व्याख्यान तथा कविता पाठ

कोलकाता, 13 अक्टूबर। हिंदी के जाने-माने गीतकार डा. बुद्धिनाथ मिश्र ने कहा है कि जितना समय और ऊर्जा हिंदी के प्रतिभाशाली कवियों ने अपनी अक्षमता को ढंकने के लिए छंद को काव्य से बहिष्कृत करने में व्यय किया, उतना अगर वे छंद को साधकर कविता लिखने में लगाते तो वे हिंदी कविता के भंडार को भूसे के बजाय अन्न से भरते जिससे आनेवाली पीढियां पलतीं। डा. मिश्र आज महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विशेष व्याख्यान दे रहे थे।

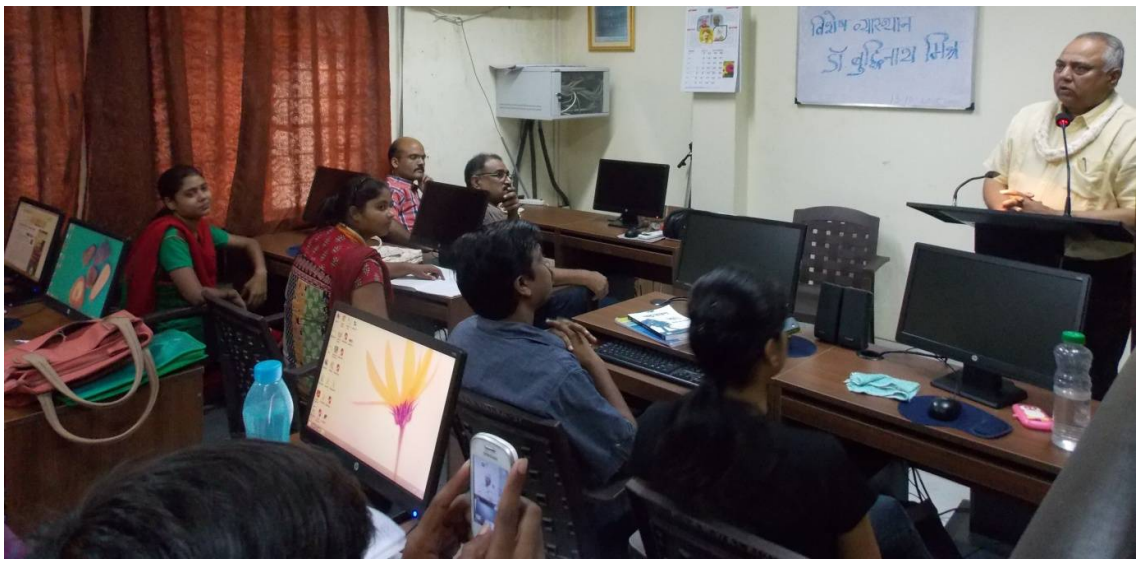

कविता पाठ करते बुद्धिनाथ मिश्र

डा. मिश्र ने कहा कि हर भाषा की उत्पत्ति संगीतात्मक हुई है और उसमें पहली स्वच्छंद अभिव्यक्ति छोटी-छोटी स्फुट कविताओं या लोकगीतों में हुई है। उन्होंने कहा कि संगीत शब्द

में होता है, लय में नहीं। डा. मिश्र ने इस अवसर पर एक घंटे तक अपनी कविताओं की सांगीतिक प्रस्तुति भी की।

संगीत चुप करा देता हैः प्रो. चित्तरंजन मिश्र

कोलकाता, 8 दिसंबर 2015। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा है कि कविता श्रोता अथवा पाठक को चुप करा देती है। संगीत भी श्रोता को चुप करा देता है। कविता व संगीत में श्रोताओं को विचलित करने की सामर्थ्य होती है। प्रो. मिश्र आज विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में विशेष व्याख्यान दे रहे थे।

कोलकाता केंद्र के प्रभारी व विद्यार्थियों के साथ प्रो. चित्तरंजन मिश्र तथा कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे

उन्होंने कहा कि कविता इस भूमि को सुंदर बनाती है। कविता के निकट जो जाता है, उसे वह थोड़ा और आदमी बनाती है। कविता और कलाएं आदमी को आदमी बनाती हैं और उस जड़ता से मुक्त करती हैं जो व्यक्ति और देश का रास्ता रोकती है। इस अवसर पर ओम प्रकाश मिश्र तथा नेहा झा ने काव्य संगीत प्रस्तुत किया। प्रति कुलपति ने ओम प्रकाश मिश्र का अंगवस्त्रम ओढ़ाकर स्वागत किया। प्रति कुलपति का प्रकाश त्रिपाठी ने सूत की माला पहनाकर और डा. अमित राय ने अंगवस्त्रम ओढ़ाकर स्वागत किया। प्रति कुलपति को कमलेश मिश्र ने अपने पिता डा. कृष्णबिहारी मिश्र की पुस्तक 'हिंदी साहित्यः बंगीय भूमिका', प्रो. अरुण होता ने अपनी पुस्तक 'कविता का समकालीन प्रमेय' तथा शंभु दत्त सती ने 'गीतांजलि' की प्रति भेंट की। कार्यक्रम का संचालन नेहा गुप्ता ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।